



**संगम भवन-आबू रोड।** शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए राजयोगिनी ईशू दादी, ब.कु. मुन्नी दादी, ब.कु. मृत्युंजय तथा ब.कु. भाई बहनें।



**कोटद्वार-उत्तराखण्ड।** शिवजयंती के अवसर पर झंडारोहण करते हुए वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री हरक सिंह रावत, भाजपा के जिलाध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह रावत, ब.कु. ज्योति, ब.कु. दीपा, ब.कु. नीलेश तथा अन्य।



**पिलानी-झुंझुनू।** विद्यालय में विद्यार्थियों को 'मूल्य शिक्षा का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब.कु. भगवान, मा. आबू। साथ हैं ब.कु. आशा तथा अन्य।



**गया-विहार।** शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में कलश यात्रा व रैली निकालकर शिव संदेश देते हुए ब.कु. शोला तथा अन्य ब.कु. भाई-बहनें।



**इंदौर-म.प्र.।** ज्ञानशिखर भवन के ओमप्रकाश भाई जी सभागार में डॉक्टरों के लिए आयोजित 'अनरेवेलिंग द मिसटिरियस ऑफ माइंड' विषयक स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. डॉ. मोहित गुप्ता। साथ हैं डॉ. भारत रावत तथा ब.कु. हेमलता।



**मुम्बई-विलेपार्ले।** सी.आर.पी.एफ. के शहीद जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने के लिए शांति यात्रा निकालते हुए ब.कु. अनसुला तथा अन्य भाई-बहनें।

## चापलूसी और प्रशंसा में फर्क समझें

अपने व्यक्तित्व के निखार के लिए जीवन में अपने उसूल पर प्रतिबद्ध रहना होगा। और अपने व्यवहार को सरल और रमणीक बनाना होगा। इस पथ पर चलने पर हमें कड़ियों से सावधान रहना होगा। प्रशंसा और चापलूसी करने वालों से भी सावधान रहना होता है। अन्यथा चापलूसी वालों के चक्र में आ गये तो आप अपना जो व्यक्तित्व बनाना चाहते हैं, वो नहीं बना सकेंगे।

### प्रशंसा और चापलूसी में क्या फर्क है?

इन दोनों के बीच सच्चाई का फर्क होता है। एक दिल से होती है, एक जुबान से। एक में असलियत होती है, दूसरी में स्वार्थ छिपा होता है। कुछ लोगों को ईमानदारी से तारीफ करने की तुलना में चापलूसी करना आसान लगता है। हम न तो चापलूसी करें, ना ही चापलूसों की बातों में आयें।

स्कूलों में एक पुरानी कहावत है 'चापलूसी मूर्खों की खुराक होती है। फिर भी कभी कभी तुम बुद्धिमान लोग इसे थोड़ा सा खाने के लिए भूखे हो जाते हो।' - जोनाथन स्विफ्ट।

झूठी तारीफ रेगिस्तान में मृग मरीचिका के समान है। जैसे जैसे हम उसके नजदीक आते हैं, और ज़्यादा निराशा मिलती है, क्योंकि यह भ्रम से ज़्यादा कुछ भी नहीं है। लोग अपने घटियापने को छिपाने के लिए चेहरे पर ईमानदारी का नकाब लगा लेते हैं।

### ईमानदारी और सच्चाई से प्रशंसा करें

**कई बार लोगों को पूरा समय न दे पाने की कमी को हम उपहारों से पूरा करने की कोशिश करते हैं। जबकि असली उपहार तो हम खुद को**



**किसी के साथ बाँट कर देते हैं।**

**सच्ची तारीफ करना उन सबसे बड़े उपहारों में से है, जो हम किसी को दे सकते हैं। इससे दूसरा व्यक्ति खुद को महत्वपूर्ण समझता है।**

मनो वैज्ञानिक विलियम जेम्स का कहना है, 'इंसान की सबसे गहरी इच्छाओं में से एक है- प्रशंसा पाने की इच्छा। अनचाहा महसूस होने का भाव तकलीफदेह हो

सकता है।'

कीमती जवाहरात सच्चे उपहार नहीं हैं, हो सकता है कि कई बार ये सिर्फ कमियों को ढूँढ़ने के लिए माफी मांगने का जरिया हो। कई बार लोगों को पूरा समय न दे पाने की कमी को हम उपहारों से पूरा करने की कोशिश करते हैं। जबकि असली उपहार तो हम खुद को किसी के साथ बाँट कर देते हैं।

सच्ची तारीफ करना उन सबसे बड़े उपहारों में से है, जो हम किसी को दे सकते हैं। इससे दूसरा व्यक्ति खुद को महत्वपूर्ण समझता है। ज़्यादातर लोगों में खुद को महत्वपूर्ण माने जाने की इच्छा काफी गहरी होती है। यह इंसान के लिए एक बड़ी प्रेरणा हो सकती है।

'आज के दौर की सबसे बड़ी बीमारी कोढ़ या तपेदिक (टी.बी.) नहीं है, बल्कि अपने को गैर ज़रूरी महसूस करने का भाव है' - मर्दर टेरेसा।

**तारीफ का असर तभी होता है जब उसमें इस तरह की कुछ बातें हों...**

**1. ये साफ और स्पष्ट होना चाहिए।** 'मैं किसी को यह कहकर चल देता हूँ कि उसने अच्छा काम किया है तो वह मन में क्या सोचेगा! वह सोचेगा कि मैंने क्या अच्छा किया है!' वह कुछ समझ नहीं पायेगा। मगर जब मैं यह कहता हूँ, 'आपने जिस तरह उस अड़ियल ग्राहक को समझाया, वह बहुत अच्छा काम था।' तब वह समझ जाता है कि उसके किस काम की तारीफ हो रही है।

- शेष पेज 7 पर

सम्बन्धों में मधुरता का आधार है - दिव्य गुण। कहते हैं स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन।

व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली

हैं। और आपसी सम्बन्धों में दरार व मन मुटाव होना निश्चित ही है। अतः सम्बन्धों में मधुरता लाने के लिए ज़रूरी है समान दृष्टि का होना।

शिकायत करना। इससे आंतरिक चोट से हम स्वयं बच सकते हैं तथा दूसरों को बचा सकते हैं और मधुर सम्बन्धों को बनाये रख सकते हैं।

## सम्बन्धों में मधुरता

### कैसे लायें?

तो पहले खुद को परिवर्तन करने का लक्ष्य रख हमें दूसरों को देना है। सहयोग की भावना, शुभ चिंतन, दूसरों के साथ प्रेम-सम्मान। जहाँ पर ये निःस्वार्थपन होगा, वही सम्बन्धों में मधुरता आ सकती है।

संसार में जितने भी कलह-क्लेश हैं, उनका मूल कारण किसी न किसी दिव्य गुण का अभाव है। यदि हम अपने जीवन में दिव्य गुणों के गुलदस्ते को धारण कर लेते हैं, तो हमारे आपसी सम्बन्धों में बहार आ सकती है।

**1. निष्पक्षता :** तर्कसंगत



आत्माएँ हों या कर्मक्षेत्र पर या फिर अपने परिवार में, सबका समान अधिकार होता है। किसी के साथ पक्षपात युक्त व्यवहार नहीं होना चाहिए। इससे बच्चों का विकास रुक जाता है। बच्चे निराश हो जाते

**2. बचाव :** जीवन में बुद्धिमता एक तलवार भी है और बचाव भी है। बचाव अर्थात् किसी के भी व्यवहार को देखते हुए भी नहीं देखना, न दोष लगाना और ना ही

**3. नम्रता और निरहंकारिता :** नम्रता और निरहंकारिता वाला मनुष्य टूटता नहीं क्योंकि उसमें लचक होती है। वह झुक जाता है। अतः उसका सभी से स्नेह और सम्बन्ध बना रहता है। निरहंकारिता तो सभी दिव्य गुणों रूपी फलों का रस या सार है।

**4. सरलता :** सरलता मन की सफाई है। जबकि कुटिलता में कई दुर्गुण रूपी कीटाणु पैदा हो जाते हैं। सरल चित्त व्यक्ति का व्यवहार छल कपट से रहित होने से वह सबको अच्छा

- शेष पेज 8 पर